अलंकार

अलंकार: अर्थ व परिभाषा

- अलंकार 'अलम्' और 'कार' दो शब्दों से निर्मित। 'अलम्' अर्थात 'भूषण'।
- 'अलंकरोति इति अलंकारः' अर्थात जो अलंकृत या भूषित करे वह 'अलंकार' है।
- 'काव्यशोभाकारान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते।' काव्य का सौंदर्य व शोभा बढ़ाने वाले कारक अलंकार कहलाते हैं।
- साहित्य के बाहरी व आंतरिक रूप को सजाने के लिए जिन तत्त्वों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें अलंकार कहते हैं।
- अलंकारों का प्रयोग भावों को उत्कर्ष प्रदान करने के लिए अथवा रूप, गुण, क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने हेतु किया जाता है।

अलंकार: भेद

शब्दालंकार— काव्य को शब्द के माध्यम से अलंकृत करना। जिस कविता में मात्र शब्दों के विशिष्टतापूर्ण प्रयोग से शोभा दुगनी–चौगुनी बढ़ जाती है, वहाँ शब्दालंकार होता है। उदाहरण:– 'सुनु सिय सत्य असीस हमारी' में 'स' वर्ण की आवृत्ति से काव्य–पंक्ति की शोभा बढ़ गई है।

अर्थालंकार— जब किसी कविता की विशेषता उसके शब्दों में न होकर, उसके अर्थ में छिपी होती है, वहाँ अर्थालंकार होता है। उदाहरण:– 'हाय! फूल सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी!' पंक्ति में छोटी बच्ची की तुलना फूल से करते हुए मार्मिक व्यथा को दर्शाया गया है।

उभयालंकार— जब कविता का सौंदर्य शब्द और अर्थ दोनों पर ही आश्रित हो और दोनों दृष्टि से चमत्कृत करे तो वहाँ उभयालंकार होता है। उदाहरण:– 'कजरारी अँखियन में कजरारी न लखाय' में शब्द और अर्थ दोनों हैं।

अलंकार: भेद

शब्दालंकार

- अनुप्रास अलंकार
- यमक अलंकार
- श्लेष अलंकार
- पुनरुक्ति अलंकार
- विप्सा अलंकार
- वक्रोक्ति अलंकार

अर्थालंकार

- उपमा अलंकार
- रूपक अलंकार
- उत्प्रेक्षा अलंकार
- मानवीकरण अलंकार
- विरोधाभास अलंकार
- संदेह अलंकार
- अतिशयोक्ति अलंकार
- भ्रांतिमान अलंकार
- दृष्टांत अलंकार आदि।

उभयालंकार

- संसृष्टि अलंकार
- संकर अलंकार

पाठ्यक्रम में सम्मिलित अलंकार:

<u>शब्दालंकार</u>- अनुप्रास अलंकार व यमक अलंकार।

<u>अर्थालंकार</u>- उपमा अलंकार, रूपक अलंकार, अतिशयोक्ति अलंकार व मानवीकरण अलंकार।

अनुप्रास अलंकार:

- किसी काव्य को सुंदर बनाने के उद्देश्य से किसी वर्ण की बार–बार आवृत्ति की जाए तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। किसी विशेष वर्ण की आवृत्ति होने पर वाक्य/पंक्ति सुनने या पढ़ने में सुंदर लगते हैं।
- इसमें किसी एक वर्ण या व्यंजन की एकाधिक बार या अनेक वर्णों या व्यंजनों की अनेक बार आवृत्ति होती है।
- उदाहरण :– 'मधुर मधुर मुस्कान मनोहर, मनुज वेश का उजियाला।'

प्रस्तुत पंक्ति में 'म' वर्ण की आवृत्ति एकाधिक बार होने के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

- 'कानन कठिन भयंकर भारी, घोर घाम वारी व्यारी।'

यहाँ क्रमशः 'क' 'भ' 'घ' एवं 'व' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

अनुप्रास अलंकार के भेद

अनुप्रास अलंकार के पाँच भेद होते हैं—

1. **छेकानुप्रास**– अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूप और क्रम से आवृत्ति हो तो 'छेकानुप्रास' अलंकार होता है। जैसे:- 'कमल कोमल।'

   यहाँ 'क' 'म' 'ल' वर्ण की आवृत्ति क्रमतः एक बार होने के कारण छेकानुप्रास अलंकार है।

   विशेष: अनेक व्यंजनों की **एक ही बार आवृत्ति** होनी चाहिए।

2. **वृत्त्यनुप्रास**– वृत्ति+अनु+प्र+आस अर्थात वृत्ति के अनुकूल प्रकृष्ट (उत्तम) वर्णविन्यास।

- एक व्यंजन की एक बार आवृत्ति: 'सब अँधियारा मिटि गया, जब दीपक देख्या माँहि।'
- एक व्यंजन की अनेक बार आवृत्ति: 'सुखिया सब संसार है, खायै अरू सोवै।'
- अनेक व्यंजनों की एक बार स्वरूपतः आवृत्ति: 'रस सरिता कब बक अवगाहहि।'
- अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः आवृत्ति: 'प्रतिभट कटक कटीले केते काटि काटि।'
- अनेक व्यंजनों की अनेक बार स्वरूपतः तथा क्रमतः आवृत्ति:

  'कहीं सुनाती निज कंत साथ थी स्व-काकली को कलकंठ कोकिला।'

अनुप्रास अलंकार के भेद

3. **लाटानुप्रास**– तात्पर्यमात्र के भेद से शब्द और अर्थ दोनों की पुनरुक्ति को 'लाटानुप्रास' अलंकार कहते हैं। जैसे:– '<u>पंकज</u> तो <u>पंकज</u>, <u>मृगांक</u> भी है <u>मृगांक</u> री प्यारी।

मिली न तेरे मुख की उपमा, देखी वसुधा सारी।।'

यहाँ पहले 'पंकज' का साधारण अर्थ कमल है और दूसरे का कीचड़ जैसे असुंदर स्थल से उत्पन्न विशेषताहीन कमल। वैसे ही प्रथम 'मृगांक' का साधारण अर्थ चंद्रमा है और दूसरे का कलंकादियुक्त चंद्रमा। इस प्रकार दोनों के तात्पर्य में भिन्नता है।

4. **अंत्यानुप्रास**– पद के अंत के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की साम्यमूलक आवृत्ति हो और अंत में तुक मिलता हो तो 'अंत्यानुप्रास' अलंकार होता है।

जैसे:– 'माँगी नाव न केवटु आना, कहहि तुम्हार मरमु मैं जाना।'

5. **श्रुत्यानुप्रास**– जब एक ही वर्ग के वर्णों की आवृत्ति हो।

जैसे:– 'दिनांत था थे दिननाथ डूबते, सधेनु आते गृह ग्वाल बाल।'

यहाँ पर 'त' वर्ग के वर्णों की आवृत्ति होने के कारण 'श्रुत्यानुप्रास' अलंकार है।

यमक अलंकार:

- यमक का अर्थ है 'दो'। अतः एक ही आकार वाले वर्ण–समूह का कम–से–कम दो बार प्रयोग आवश्यक है।
- जब काव्य पंक्तियों के सौंदर्य को बढ़ाने के लिए किसी शब्द की एकाधिक बार आवृत्ति की जाए तो वहाँ यमक अलंकार होता है। काव्य में प्रयुक्त शब्द का अर्थ हर बार भिन्न होता है। यमक अलंकार हेतु शब्द की कम–से–कम दो बार आवृत्ति होना आवश्यक है।
- उदाहरण :– '**कनक कनक** ते सौगुनी मादकता अधिकाय।'
- प्रस्तुत पंक्ति में 'कनक' शब्द की दो बार आवृत्ति हुई है। एक 'कनक' का अर्थ 'गेहूँ' और दूसरे 'कनक' का अर्थ 'स्वर्ण' है। इस प्रकार दोनों के भिन्न अर्थ निकलने के कारण यहाँ यमक अलंकार है।
- 'माला फेरत जुग भया, फिरा न **मन का** फेर।

  कर का **मनका** डारि दे, **मन का** मनका फेर।।'

  यहाँ 'मनका' शब्द की एकाधिक बार आवृत्ति हुई है।

यमक अलंकार के भेद

यमक अलंकार के दो भेद होते हैं—

1. **अभंग पद यमक**– किसी शब्द को बिना तोड़े–मरोड़े एक ही रूप में भिन्न–भिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाए। जैसे:– 'जगती जगती की मूक प्यास।'
यहाँ 'जगती' शब्द की आवृत्ति अपने मूल रूप में भिन्न अर्थ प्रदान करने हेतु हुई है। पहले 'जगती' का अर्थ जागना है और दूसरे का संसार है। अतः यहाँ अभंग पद यमक अलंकार है।

2. **सभंग पद यमक**– जब जोड़–तोड़ कर एक जैसे वर्ण–समूह (शब्द) की आवृत्ति होती है और उसमें भिन्न–भिन्न अर्थ की प्रकृति होती है तो उसे सभंग पद अलंकार कहते हैं।
जैसे:– 'पास ही रे हीरे की खान, खोजता कहाँ और नादान।'
यहाँ 'ही रे' वर्ण–समूह की आवृत्ति हुई है।

उपमा अलंकार:

- ‘उप’ का अर्थ है ‘समीप से’ और ‘मा’ का अर्थ ‘तौलना या देखना’। इस प्रकार ‘उपमा’ अर्थात एक वस्तु के समीप दूसरी वस्तु को रखकर उनकी समानता प्रतिपादित करना।
- जब किसी प्रस्तुत वस्तु की, उसके किसी विशेष गुण, क्रिया, स्वभाव आदि की समानता के आधार पर अन्य अप्रस्तुत से समानता स्थापित की जाए तो वहाँ उपमा अलंकार होगा।
- दो भिन्न वस्तुओं में समान धर्म के कारण समानता दिखाना।
- उदाहरण:- ‘हरि पद कोमल कमल से।’

यहाँ हरि (भगवान) के पैरों को कमल के समान कोमल बताया गया है। यहाँ ‘पद’ उपमेय है और ‘कमल’ उपमान है।

उपमा अलंकार के अंग

उपमा अलंकार के चार अंग होते हैं—

1. उपमेय— जो वर्णन का विषय है अर्थात जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में बात की जा रही है, वह 'उपमेय' कहलाता है।

2. उपमान— वाक्य या काव्य में उपमेय की जिस प्रसिद्ध वस्तु से तुलना की जा रही है, वह 'उपमान' कहलाता है।

3. साधारण धर्म— उपमान और उपमेय में समानता का धर्म ही 'साधारण धर्म' होता है। जो गुण उपमान और उपमेय दोनों में हो और जिससे दोनों की तुलना की जा रही है।

4. वाचक शब्द— जिस शब्द द्वारा उपमान और उपमेय में समानता दिखाई जा रही हो, वह 'वाचक शब्द' होता है।

जैसे:- 'सागर सा गंभीर हृदय हो, गिरि सा ऊँचा हो जिसका मन।'

प्रस्तुत उदाहरण में 'हृदय' एवं 'मन' उपमेय, 'सागर' एवं 'गिरि' उपमान, 'गंभीर' एवं 'ऊँचा' साधारण धर्म, 'सा' वाचक शब्द है।

उपमा अलंकार के भेद

उपमा अलंकार के मुख्य दो भेद होते हैं—

1. <u>पूर्णोपमा</u>— उपमा के चारों अंगों का शब्द द्वारा कथन हो तो उसे पूर्णोपमा कहते हैं।

   जैसे :- 'मोम सा तन घुल चुका, अब दीप सा मन जल चुका है।'

2. <u>लुप्तोपमा</u>— जब उपमा के अंगों में से किसी एक या एकाधिक अंगों का लोप हो तो उसे लुप्तोपमा कहते हैं।

   जैसे :- 'नंदन जैसा नहीं और उपवन है कोई।'

   यहाँ 'नंदन' उपमेय' और 'जैसा' वाचक शब्द है। उपमान और साधारण धर्म लुप्त हैं।

रूपक अलंकार:

- 'रूपक' अर्थात जिसका कोई रूप हो। रूप से युक्त।
- उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप रूपक है।
- जहाँ उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे अर्थात जहाँ उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त कर दिया जाता है।
- गुण की अत्यंत समानता के कारण उपमेय को ही उपमान बता दिया जाए।
- उदाहरण :- **'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।'**

यहाँ 'राम रतन' को ही 'धन' बता दिया गया है। 'राम रतन' उपमेय पर 'धन' उपमान का आरोप है एवं दोनों में अभिन्नता है।

रूपक अलंकार के भेद

रूपक अलंकार के तीन प्रमुख भेद हैं—

1. **निरंग रूपक:** जहाँ अंगों के बिना उपमान का उपमेय में आरोप हो, वहाँ 'निरंग' रूपक होता है। 'मुखचंद्र' 'चरणकमल' आदि इसी के उदाहरण हैं।
   जैसे :- 'नयन-नीलिमा के लघु नभ में।'
   यहाँ 'नयन-नीलिमा' (उपमेय) में 'नभ' (उपमान) का आरोप है।
2. **सांग रूपक:** अंगों सहित उपमान का उपमेय में आरोप।
   जैसे :-'आकाश-सरोवर में सूर्य-हंस तारक-मौक्तिकों को चुग रहा।'
   यहाँ आकाश प्रधान है और सूर्य-तारे उसके अंग हैं। इसी प्रकार सरोवर में हंस और मौक्तिक (मोती) का निवास होता है।
3. **परंपरित रूपक:** जहाँ एक आरोप दूसरे आरोप का कारण हो। जहाँ आरोपों की श्रृंखला-सी बन जाए। जैसे :-'राजन्! खल-वन के लिए आप दावाग्नि हैं।'
   यहाँ 'राजऩ व दावाग्नि' तथा 'खल-वन' आपस में मिलकर एक-दूसरे को सार्थक बनाते हैं।

अतिशयोक्ति अलंकार:

- अतिशयोक्ति अर्थात अतिशय (बढ़ी-चढ़ी) + उक्ति (कथन)।
- सामान्य लोक-सीमा का उल्लंघन कर वर्णन करना।
- उपमेय को छिपाकर उपमान के साथ उसकी अभेद प्रतीति कराना।
- उदाहरण:- 'लहरें व्योम चूमती उठतीं।'
- यहाँ समुद्र की लहरों को आकाश चूमते हुए कहकर उनकी अतिशय ऊँचाई का उल्लेख किया गया है।

अतिशयोक्ति अलंकार के भेद

अतिशयोक्ति अलंकार के छह भेद माने गए हैं—

1. **रूपकातिशयोक्ति:** भेद में अभेद। जहाँ उपमेय को छिपाकर केवल उपमान का बोध कराया जाए।

   जैसे:– 'बाँधा था विधु को किसने इन काली ज़ंजीरों से।'

   यहाँ 'विधु' (चंद्र) द्वारा मुख उपमेय का और 'काली ज़ंजीरों' द्वारा केश उपमेय का बोध कराया गया है।

2. **भेदकातिशयोक्ति:** अभेद में भेद। जहाँ अभेद रहने पर भी भेद का वर्णन हो। इसमें और, अन्य, दूसरा इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ करता है।

   जैसे:–'धनुष उठाया ज्यों ही उसने, और चढ़ाया उसपे बाण।
   धरा सिंधु नभ काँपे सहसा, विकल हुए जीवों के प्राण।'

   यहाँ 'धरा, सिंधु, नभ का काँपना' अतिशयोक्ति है।

अतिशयोक्ति अलंकार के भेद

3. असंबंधातिशयोक्ति: जहाँ संबंध के रहने पर भी संबंध का अभाव कहा जाए।

जैसे:–'वह सजीव रचना थी युग की पल में आकर झलकी,
नहीं समायी जड़–जंगम में छवि उसकी जो छलकी।'

यहाँ श्रीकृष्ण की छवि जड़–जंगम में न समाने की बात की गई है।

4. संबंधातिशयोक्ति: जहाँ संबंध न रहने पर भी संबंध बताया जाए।

जैसे:–'पड़ी तरल यमुना तरंगिणी घनी खड़ी हो जावे
तो उस अंग–भंगिमा का कुछ रंग–ढंग वह पावे।'

यहाँ कृष्ण के शरीर का आंशिक दृश्य पाने हेतु तरल यमुना के घनरूप में खड़े हो जाने की कल्पना असंबंध में संबंध का कथन है।

अतिशयोक्ति अलंकार के भेद

5. अक्रमातिशयोक्ति: जहाँ कार्य और कारण का एक साथ होना कहा जाए।

जैसे:- 'वह शर उधर गांडीव-गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।
धड़ से जयद्रथ का उधर सिर छिन्न वैसे ही हुआ।'

यहाँ बाण का गांडीव से छूटना (कारण) और जयद्रथ का सिर कटना (कार्य) एक साथ वर्णित हैं।

6. अत्यंतातिशयोक्ति: जहाँ कारण के पहले कार्य का ही होना कहा जाए।

जैसे:-'पड़ी अचानक नदी अपार घोड़ा कैसे उतरे पार।
राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार।'

राणा जब तक यह सोचें कि घोड़ा कैसे नदी पार उतरे, तब तक चेतक उस पार था।

मानवीकरण अलंकार:

- जहाँ जड़ वस्तुओं अथवा प्रकृति पर मानवीय चेष्टाओं को आरोपित किया जाए, वहाँ 'मानवीकरण' अलंकार होता है।
- निर्जीव वस्तुओं में सजीव क्रियाएँ दर्शाई जाएँ।
- उदाहरण:- 'फूल हँसे, कलियाँ मुसकाईं।'

  यहाँ फूलों को हँसता हुआ और कलियों को मुसकुराता हुआ बताया गया है।
- उदाहरण:- 'मेखलाकार पर्वत अपार अपने सहस्र दृग-सुमन फाड़,

  अवलोक रहा है बार-बार नीचे जल में निज महाकार'

  यहाँ पर्वत द्वारा स्वयं अपने विशालकाय अस्तित्व को देखा जा रहा है। यह एक मानवीय क्रिया है।

धन्यवाद